



बस्तर क्षेत्र में निवासरत माड़िया जनजाति के बांस शिल्पकला एवं पारंपरिक ज्ञान प्रणाली का विश्लेषण

(बस्तर संभाग के नारायणपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

¹डॉ. मधुलता बारा, प्राध्यापक एवं प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर, साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.), 492010, Email- madhubara23@gmail.com

²डॉ. पुरोहित कुमार सोरी, सहायक प्राध्यापक एवं प्रोजेक्ट को-कोऑर्डिनेटर, शासकीय गुण्डाधुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोंडागांव (छ.ग.), 494226, Email- purohitsori@gmail.com

³डॉ. सुनीता सोड़ी, रिसर्च एसोसिएट, ⁴डॉ. रामदेव जुर्ही, रिसर्च असिस्टेंट, साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.), 492010

सारांश (Abstract) –

माड़िया जनजाति बस्तर क्षेत्र की गोंड जनजाति की एक उपजनजाति है। माड़िया जनजाति बांस शिल्पकारी में उत्कृष्ट हैं और वे प्राचीन पारंपरिक ज्ञान प्रणाली में पारंगत हैं। छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र के नारायणपुर जिले में विशेष रूप से अबूझमाड़ क्षेत्र और उसके आस-पास के पहाड़ी क्षेत्रों में निवासरत माड़िया समुदाय के लोगों में बांस शिल्प एक महत्वपूर्ण ज्ञान-परंपरा है, जो केवल आर्थिक आजीविका का आधार ही नहीं, बल्कि उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान का महत्वपूर्ण अंग है। प्रस्तुत शोधपत्र बस्तर में निवासरत माड़िया जनजाति के बांस शिल्पकारों द्वारा बांस से निर्मित वस्तुओं का विश्लेषण कर उनके पारंपरिक ज्ञान के महत्व को उजागर करने का प्रयास किया गया है। इस शोध आलेख में बांस से निर्मित घरेलू वस्तुओं और मत्स्य वस्तुओं को अध्ययन में शामिल किया है। बांस शिल्प से निहित ज्ञान प्रणाली जो कि पर्यावरण-अनुकूल दृष्टिगोचर है, जिसमें बांस का चयन, कटाई, संरक्षण और आकार देने की वैज्ञानिक प्रक्रियाएँ लोक अनुभव पर आधारित होती हैं। बांस की कलाकृति में समुदाय की जीवनशैली, प्रतीकात्मकता और सौंदर्यबोध की अद्भूत झलक देखी जा सकती है। वर्तमान में भी यह शिल्पकला उनकी आजीविका, पहचान और सांस्कृतिक निरंतरता का महत्वपूर्ण माध्यम है। इस प्रकार माड़िया जनजाति की बांस शिल्प न केवल कला कौशल का प्रदर्शन है, बल्कि मनुष्यों के प्राकृतिक संबंध, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक धरोहर को बारीकी से समझने का एक मुख्य स्रोत भी है।

कुंजी शब्द (Key words) – बस्तर, माड़िया जनजाति, बांस शिल्प, घरेलू वस्तुएँ, ढोलंगी, टोकरी, सुपा, गपा, गवली, जिब्बी, कच्चोक, झूला, मत्स्य आखेट वस्तुएँ, ऐन्दर, धीर, झाझर, डुटी, पारंपरिक ज्ञान प्रणाली, पालने, ताबूत, बाइसन-हार्न, धनुष, वदुड़, तीर, निंदल-वदूड़, अंकुरित बास्ता, चटाई, जाल, विक्रय, वस्तु विनिमय, शिकार, गोटुल, लांदा, सिहाड़ी।

भूमिका (Introduction) –

मनुष्य अपनी विशिष्ट प्राकृतिक विशेषताओं के कारण विकास के आरंभ से ही सार्वभौमिक सामग्री के रूप में बांस का उपयोग करते आ रहे हैं। चीन में 5000 वर्ष पूर्व पाषाण युग और कांस्य युग के समय से बांस का उपयोग किया जा रहा है। पृथ्वी पर गेहूँ, कपास फसलों के साथ ही बांस के पौधे वं घोड़े, गाय इत्यादि पशुओं का विकसित हुआ, जो मानव के स्वयं के विकास के लिए उत्तरदायी है [1]। बांस तेजी से बढ़ने वाली नरम लचीली बारहमासी घास है, जो कि 1400 से अधिक प्रजातियाँ शामिल हैं। यह विविध जलवायु एवं मृदा परिस्थितियों में विकसित होती है। लगभग 2.5 अरब लोग अपनी दिनचर्या में बांस का उपयोग मुख्यतः रेशे और भोजन के रूप में करते हैं। बांस अनुवांशिक रूप से संसाधनों में चीन के बाद दूसरा सबसे समृद्ध भारत देश है [2]। भारत के जनजातीय क्षेत्रों में बांस सामान्यतः महत्वपूर्ण प्राकृतिक वस्तुओं में से एक है, जो स्थानीय स्तर पर आसानी से उपलब्ध होते हैं। अनादिकाल से लेकर आज तक, बांस भारत में लोगों के जीवन का एक अभिन्न अंग रहा है।

महाकाव्य युग से ही बांस भारतीयों के लिए एक प्रसिद्ध पौधा है। भगवान कृष्ण का संबंध बांस से है। उनकी बांसुरी बांस से बनी थी। महाभारत की प्रस्तावना में बांस के पेड़ों का उल्लेख है। ऐसा कहा जाता है कि बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए भारत से जापान गए बौद्ध भिक्षु अपने साथ बांस के बीज ले गए [3]। भारत को शिल्प कौशल की बहुस्तरीय सांस्कृतिक विविधतापूर्ण समृद्ध विरासत का अपार सौभाग्य प्राप्त है, जो ऐतिहासिक घटनाओं के उतार-चढ़ाव और सामाजिक प्रथाओं और धार्मिक विश्वासों पर आधारित है [4]। भारत देश बांस का भारी मात्रा में उत्पादन करता है। जिससे भारत में प्राचीनकाल से बांस शिल्प का एक महत्वपूर्ण स्थान है। बांस के विविध आवश्यक उपयोग जो कि उनके आर्थिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक महत्व को दर्शाते हैं। बांस को 'हरा सोना', 'गरीब आदमी की लकड़ी', 'बांस, लोगों का मित्र' और 'पालने से ताबूत की लकड़ी' जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाने लगा है [5]। नृतत्व-वैज्ञानिकों के अनुसार विश्व की सबसे प्राचीन जनजाति बस्तर की बाइसन-हार्न माड़िया को कहा गया है। बस्तर की जनजातीय सभ्यता लगभग

4000–4500 वर्ष पुरानी तथा अंडमान निकोबार की जावंगा जनजाति के बाद सर्वाधिक पुरानी आदिम जनजाति मानी जाती है। बस्तर के जनजीवन से बांसशिल्प का जीवन्त संबंध रहा है, जैसे सुपा, टुकना, गपा, गवली, चरेया, परला आदि घरेलू उपकरण, कृषि उपकरण, आखेट हेतु प्रयुक्त धनुष और तीर ये सभी बांसशिल्प की ही देन हैं [6]।

माड़िया जनजाति (Madia Tribe) – माड़िया जनजाति के रीति-रिवाजों एवं तीज-त्यौहारों में सर्वाधिक तेलगु एवं हल्बी बोली का प्रभाव पड़ा है। इस समुदाय की मातृबोली 'गोंडी' है, किन्तु इसके अतिरिक्त हल्बी व तेलगु बोली का भी प्रयोग करते हैं [7]। माड़िया गोंड जनजाति की एक उपजनजाति समूह है, जो वनों, पहाड़ों व मैदानी क्षेत्रों में निवास करती है। माड़िया जनजाति के युवक 'गौर सिंग' का मुकुट सिर में धारण कर नृत्य करते हैं। 'माड़' अर्थात् सघन पहाड़ी जंगल/माड़ के मूल निवास माड़िया/दण्डामी माड़िया का मूलस्थान 'माड़' को माना जाता है। जो माड़िया अपने मूल निवास माड़ को छोड़कर बस्तर, दंतेवाड़ा, बीजापुर के पठारी क्षेत्र में आकर बस गये वह दण्डामी माड़िया कहलाए। ये स्वयं को कोईतूर कहते हैं। माड़ क्षेत्र में इनके पूर्वज बेवर खेती करते थे। पठारी क्षेत्र में आने के बाद स्थिर खेती करने लगे हैं [8]। दंडामी माड़िया व माड़िया समुदाय के पुरुष सदस्यों द्वारा गौर सिंग मुकुट धारण कर नृत्य करने के आधार पर उन्हें बायसन हार्न माड़िया भी कहा जाता है [9]।

उद्देश्य (Objective) – प्रस्तुत शोधपत्र में बस्तर की माड़िया जनजाति के बांस शिल्पकला से संबंधित उद्देश्य निम्नानुसार है :-

1. माड़िया जनजाति के शिल्पकार द्वारा बांस से निर्मित वस्तुएँ जिनमें दैनिकी घरेलू वस्तुएँ एवं मत्स्य आखेट संबंधित वस्तुएँ का विश्लेषण करना।
2. बांस शिल्पकला निर्माण करने के पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को उजागर करने का प्रयास किया गया है।
3. माड़िया जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन में बांस के महत्व को समझना।

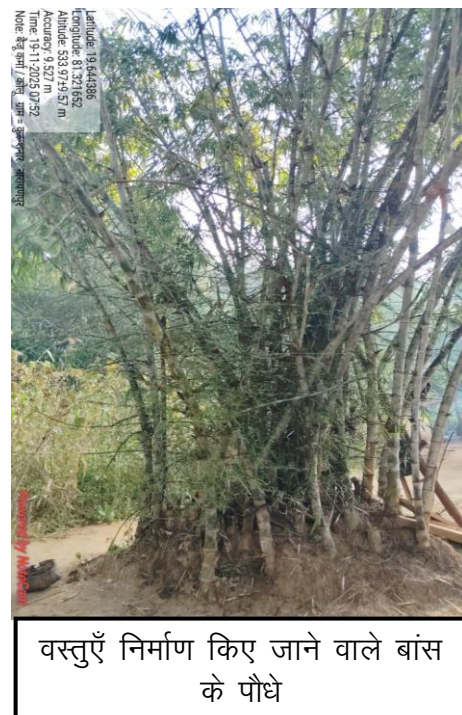
शोध सामग्री एवं विधि (Research material and method) – इस शोध कार्य का अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर संभाग के नारायणपुर जिला में निवासरत माड़िया जनजाति के बांस शिल्पकला पर आधारित है। इस अध्ययन के लिए वर्णनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया है। शोध अध्ययन हेतु बांस शिल्पकलाओं की जानकारी रखने वाले बांस शिल्पकारों एवं बुजुर्गों से तथ्यों की

जानकारी एकत्रित की गई है। उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से 70 कुंजी सूचनादाताओं का चयन किया गया है। प्राथमिक तथ्यों के स्रोत जैसे, अर्द्धसहभागी अवलोकन, साक्षात्कार—निर्देशिका, वैयक्तिक अध्ययन है, तथा द्वितीयक तथ्यों के स्रोत जैसे, पुस्तक, इंटरनेट व रिपोर्ट से तथ्यों को संकलित किया गया है। तथ्यों का विश्लेषण गुणात्मक विधि से किया गया है।

परिणाम एवं चर्चा (Results and Discussion) :

माड़िया जनजाति में बांस का उपयोग (Use of bamboo in madia tribe) –

माड़िया जनजाति समुदाय बांस को गोंडी बोली 'वदूड़' कहते हैं तथा वस्तुएँ निर्माण किए जाने वाले बांस पौधा जिसे गोंडी बोली में 'निंदल वदूड़' कहा जाता है। बांस उनकी आजीविका का महत्वपूर्ण हिस्सा है जैसे भोजन, आवास, घरेलू वस्तुएँ व मत्स्य आखेट संबंधी वस्तुएँ इत्यादि का निर्माण कर वह स्वयं उपयोग करते और हॉट-बाजारों में विक्रय भी किया जाता है। उनकी आजीविका उनके प्राकृतिक परिवेश पर निर्भर करती है। बांस उनके जीवन शैली के अभिन्न अंग है। बांस की प्रचुरता ने जीविकोपार्जन के लिए आत्मनिर्भर बना दिया बांस के उपयोग के निम्न प्रकार है –



में
का

हैं

है।

1. **घरेलू वस्तुएँ :** बांस का उपयोग माड़िया समुदाय अपने घरों के निर्माण के लिए करते हैं। बांस से घर, छत, दरवाजे, खिड़कियाँ व घर के चारों ओर बांस की दीवार (बाड़ी) जिसे बहुत ही सामान्य रूप से निर्माण किया जाता है। अपने दैनिक जीवन में विभिन्न कार्यों के लिए बांस से निर्मित वस्तुओं का उपयोग किया जाता है, जैसे बांस की टोकरियाँ, कुर्सियाँ, सूपा, चटाई एवं अन्य वस्तुएँ हैं।
2. **आहार सामग्री :** बांस की अंकुरित कोमल शाखाएँ जिसे स्वादिष्ट और पौष्टिक खाद्य पदार्थ के रूप में सेवन करते हैं। बांस की कोमल शाखा एक मौसमी आहार है, जो पोषण से भरपूर है तथा स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है, जो कि हड्डियों को मजबूत करने और पाचन तंत्र को सुधारने के लिए औषधीय रूप में उपयोगी है। बसंत ऋतु के समय जब बांस के अंकुर धरती से बाहर निकलते हैं, तब बांस के कोमल शाखाओं की कटाई की जाती है। बस्तर क्षेत्र में बांस के

अंकुर को 'बास्ता' और 'करील' के नाम से जाना जाता है, किंतु सर्वाधिक 'बास्ता' नाम से प्रचलित है। 'बास्ता' की सब्जी माड़िया समुदाय की मौसमी पारंपरिक व्यंजन है। बांस के करील को उबालकर सुखाकर, सूखे करील के चूर्ण या टुकड़ों को सरसों के तेल व पारंपरिक मसालों के साथ मिलाकर अचार बनाया जाता है, जो स्वाद में खट्टा, चटपटा व पौष्टिक होता है। वर्षा ऋतु काल में करील की सूखी सब्जी बनाकर सेवन किया जाता है। बस्तर की एक पारंपरिक सब्जी 'आमट' है, जिसमें सूखी करील का उपयोग प्रमुखता से होता है।

3. **आखेट वस्तुएँ** : बांस से आखेट के लिए विभिन्न वस्तुओं का निर्माण किया जाता है इस तरह बांस के साथ संपूर्ण व्यवसायिक गतिविधि घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। बांस से निर्मित वस्तुएँ जैसे मछली पकड़ने के जाल, शिकार करने के लिए फंदे व जाल आदि हैं। माड़िया समुदाय आखेट की वस्तुओं से अपना जीविकोपार्जन करते हैं। यह उनके हस्तशिल्प कौशल का प्रतीक एवं जीविकोपार्जन का साधन है।

माड़िया जनजाति के बांस शिल्पकारों द्वारा निर्मित उपकरण (Tools made by bamboo craftsmen of the Madia tribe) – बांस बस्तर के जनजातियों की जीवंत शिल्प परंपरा है। बस्तर में माड़िया जनजाति के लोग अपने दैनिक जीवन में उपयोग करने के लिए बांस के विभिन्न कलात्मक वस्तुओं का निर्माण स्वयं करते हैं। बस्तर में बांस शिल्प के अनेक परंपरागत शिल्पकार हैं। माड़िया जनजाति के लोगों द्वारा बांस से निर्मित वस्तुएँ विभिन्न प्रकार के हैं। मैंने अपने शोधपत्र में बांस से निर्मित घरेलू वस्तुएँ व मत्स्य वस्तुएँ इन्हें दो भागों में विभाजित कर अध्ययन किया है :-

अ. घरेलू वस्तुएँ –

1. **ढोला कुच्चा (ढोलगी)** – ढोला कुच्चा धान संग्रहित करने वस्तु है जिसे बस्तर क्षेत्र में 'ढोलगी' कहा जाता है। नारायणपुर जिला के माड़िया जनजाति 'ढोलगी' को गोंडी में 'ढोला कुच्चा' कहते हैं। बांस की पट्टियाँ, बांस की डंडी व चाकू की सहायता से 'ढोला कुच्चा' का निर्माण जाता है। ढोला कुच्चा की लंबाई 107 सें.मी. और गोलाई लगभग 200 सें.मी. है। निर्मित किए गए ढोला कुच्चा वस्तु स्थानीय हॉट-बाजारों में लगभग 1000 रुपये के दर पर किया जाता है जो आय का एक स्रोत है। शिल्पकार स्वयं कुच्चा का उपयोग अपने घरों में धान संग्रहण के लिए करते



ढोला कुच्चा

की
बोली
पतली
किया
को
विक्रय
ढोला
हैं।

2. **ऐती (सूपा)** – सूपा जिसे गोंडी बोली में 'ऐती' कहा जाता बांस की पट्टियाँ, बांस की पतली डंडी व चाकू की सहायता से 'ऐती' का निर्माण किया जाता है। सूपा की संरचना U आकार की होती है। सूपा की 50 सें.मी., निचले सिरे की चौड़ाई 59 सें.मी., मध्य भाग चौड़ाई 46 सें.मी. एवं ऊपरी सिरे की चौड़ाई 32 सें.मी. सूपा से धान, मोटे अनाज, दलहन, तिलहन एवं अन्य अनाजों की साफ-सफाई करने हेतु तथा अन्य सामग्री सुखाने के लिए उपयोग किया जाता है। हॉट-बाजारों सूपा का विक्रय किया जाता है जो कि आय का भी एक स्रोत है। घरेलू कार्यों में सूपा का प्रयोग किया जाता है।



ऐती

है।
लंबाई
की
है।
को
में

3. **कुच्चा (टोकरी)** – टोकरी को गोंडी बोली में 'कुच्चा' कहते नारायणपुर जिले के कुछ स्थानों में टोकरी को 'गप्पा' भी जाता है। बांस की पट्टियाँ, बांस की पतली डंडी व चाकू सहायता से 'कुच्चा' निर्मित किए जाते हैं। बांस की पट्टियों एक दूसरे के ऊपर लंबवत और क्षैतिज रूप में रखकर गुंथा है। पट्टियों का लंबवत रूप भीतर की ओर तथा क्षैतिज बाहर की ओर होता है। टोकरी की ऊपरी गोलाई को बांस की छड़ी से गुंथा जाता है। टोकरी



हैं।
कहा
की
को
जाता
रूप

का उपयोग आर्थिक क्रियाकलापों, वनोपज संकलन, घरेलू सामग्री का संग्रहण एवं विवाह संस्कारों में टोकरी का उपयोग किया जाता है। तथा इसके अतिरिक्त 'हाट' बाजारों में टोकरी का प्रयोग थैला के रूप में सामग्री लाने व ले जाने में सहायक होती है। माड़िया समुदाय में टोकरी का उपयोग अपनी आवश्यकता के अनुसार किया जाता है। निर्मित टोकरी का उपयोग स्वयं करने के साथ ही साप्ताहिक बाजारों में विक्रय भी किया जाता है। कुच्चा एक स्रोत है।

4. **जिब्बी (टोकरी)** – बांस की पट्टियाँ और बांस की पतली डंडी व चाकू की सहायता से 'जिब्बी' निर्माण किया जाता है। जिब्बी का प्रयोग 'लांदा' बनाने के लिए किया जाता है, 'जिब्बी' जो कि एक गोंडी शब्द है। बांस की पतली पट्टियों से निर्मित त्रिकोणीय आकार की टोकरी है। इस टोकरी का ऊपरी फैला हुआ एवं निचला सिरा गहरा और सकरा होता बांस की पट्टियों को एक दूसरे के ऊपर लम्बवत और क्षैतिज रूप में रखकर गुंथा जाता है। दूसरी प्रक्रिया में लम्बवत पट्टियाँ बाहर की ओर तथा क्षैतिज पट्टियाँ की ओर होता है। बांस की पट्टियों को निचला सिरा लेकर मध्य भाग तक समान रूप से बनाया जाता है। ऊपरी सिरा फैला हुआ जिसके तीनों हिस्सों को लंबा करके बनाया जाता है। जिब्बी वस्तु से खाने युक्त 'पिटिया' बनाया जाता है, जो कि चावल के आटे की बनायी जाती है। 'पिटिया' वह पदार्थ है जिससे बस्तर क्षेत्र में 'लांदा' पेय पदार्थ बनाया जाता है। जिब्बी वस्तु को बाजारों में विक्रय किया जाता है जिसका प्रयोग केवल समुदाय के द्वारा ही किया जाता है।



जिब्बी

एक
सिरा
है।
भीतर
से

5. **कच्चोक (ढक्कनदार टोकरी)** – कच्चोक बांस से बनी एक ढक्कनदार टोकरी है। इसे गोंडी बोली में 'कच्चोक' कहा जाता है। कच्चोक की लंबाई 27 सें.मी., मध्य गोलाई 113 सें.मी. व ऊपरी सिरा की गोलाई 121 सें.मी. है। बांस से निर्मित ढक्कन की लंबाई 10 सें.मी. व चौड़ाई 30 सें.मी. है। टोकरी का निर्माण बांस की पट्टियों से एक पंक्ति उर्ध्वाधर रूप में दूसरी पंक्ति क्षैतिज रूप में एक-दूसरे के ऊपर से बुना जाता है। इस प्रकार से टोकरी को एक आयताकार या चौकोर वांछित आकार दिया जाता है। बुनाई पूर्ण होने के बाद ऊपरी सिरे के किनारों को

मोड़ा जाता है, ताकि वह ना खुले इसके लिए सुरक्षित किया जाता है। यह एक मजबूत टोकरी है जिसका ढक्कन आयताकार होता है। इसके ढक्कन को भी बांस की पट्टियों से उर्ध्वाधर व क्षैतिज रूप से एक-दूसरे के ऊपर बुना जाता है। ढक्कन के ऊपरी सिरा पर मजबूती प्रदान करने के लिए बांस के छड़ी को पट्टियों से जोड़कर जाता है। ढक्कन का प्रयोग टोकरी को ढँकने के लिए जाता है। 'कच्चोक' के चार प्रमुख कोने से रस्सी को जाता है। रस्सी की सहायता से कच्चोक को कावड़ से उठाकर आसानीपूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान में ले में सहायक होती है। इस ढक्कनदार टोकरी का प्रयोग समारोह के मांगलिक कार्यक्रम में किया जाता है। कच्चोक में महुआ शराब व चावल रखा जाता है और वस्तु में रखे सामग्री को वधू पक्ष को उपहार स्वरूप की जाती है। कच्चोक वस्तु माड़िया समुदाय की सामाजिक-सांस्कृतिक धरोहर है। कच्चोक वस्तु में नये वस्त्र भी रखा जाता है, जिसे एक बास्केट के रूप में उपयोग करते हैं। कच्चोक को हॉट-बाजारों में विक्रय किया जाता है जो उनके आय का स्रोत है।



कच्चोक

बुना
किया
कसा
जाने
विवाह
इस
प्रदान

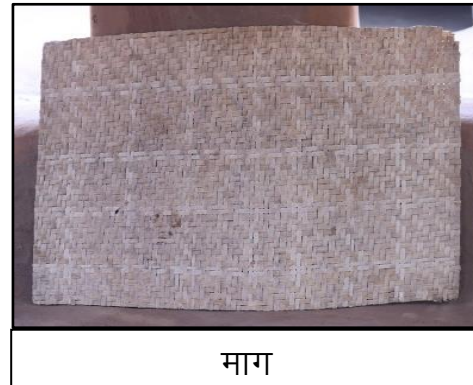
6. **उकड़ (झूला)** – झूला को गोंडी में 'उकड़' कहा जाता झूला उपकरण निर्माण करने के लिए बांस को सुखाया है इसके पश्चात चाकू की सहायता से बांस की पट्टियाँ, की पतली डंडी व सिहाड़ी रस्सी से बनाई जाती है। जिसमें झूले का पिछला भाग उभरा हुआ उत्तलाकार रूप झूला का निर्माण किया जाता है। झूले की लंबाई 63 सें. चौड़ाई 47 सें.मी., ऊपरी गोलाई 182 सें.मी. एवं पिछले का अर्द्धगोलाई 60 सें.मी. है। माड़िया जनजाति द्वारा निर्मित पारंपरिक झूला शिशुओं के शयन हेतु उपयोग में लाए जाते हैं। बुजूर्गों द्वारा ही झूला निर्माण करने का कार्य किया जाता है।



उकड़

है।
जाता
बांस
में
मी.,
भाग

7. **माग (चटाई)** – बांस की पट्टियों को लम्बवत और क्षैतिज रूप में रखकर बुना जाता है। लम्बवत रूप में भीतर की ओर एवं क्षैतिज रूप में बाहर की ओर बुना जाता है। इसके पश्चात् दूसरी प्रक्रिया में लम्बवत रूप बाहर की ओर और क्षैतिज भीतर की ओर बुनकर चटाई का निर्माण किया है। चटाई आयताकार आकृतियों की बनाई जाती है। चटाई का आकार छोटा या बड़ा अपनी सुविधानुसार बनायी जाती है। तीन से चार दिन में एक चटाई निर्माण करते हैं। प्रदर्श चटाई की लंबाई 158 सें. और चौड़ाई 74 सें.मी. है।



माग

रूप
जाता
है।
का
मी.

ब. मत्स्य आखेट संबंधित वस्तुएँ – माड़िया जनजाति द्वारा मछली पकड़ने के लिए बांस से निर्मित वस्तुएँ निम्नानुसार है—

1. **ऐन्दर (दांदर)** – दांदर को गोंडी बोली में 'ऐन्दर' कहा जाता है, इस वस्तु की संरचना लंबा एवं झालीनुमा है। ऐन्दर वस्तु एक शंकवाकार आकार का है, जो एक सिरे पर चौड़ा और दूसरे सिरे को संकरा बनाया जाता है। यह उपकरण का संकरा सिरा जो कि बांस की सीधी लंबी पट्टियों से निर्मित है जिसके कुछ दूरी के मध्य पर सिहाड़ी रस्सी से कसा जाता है। वस्तु की चौड़ी



ऐन्दर

सिरा
को
बांस
की

पट्टियों से ऊर्ध्वाधर मानकों के ऊपर और नीचे से गुंथा जाता है। ऊपरी सिरे को बांस की पतली डंडी से गोलाकार रूप में बुनकर 'ऐन्दर' को स्थिरता व मजबूत बनाते हैं। वस्तु का चौड़ा सिरा मछलियों का प्रवेश द्वार है। 'ऐन्दर' मत्स्य आखेट जिसका प्रयोग खेतों के छोटे-छोटे नालों में मछली पकड़ने के लिए किया जाता है।

2. **धीर** – बांस की पतली डंडी व प्लास्टिक रस्सी 'धीर' वस्तु का निर्माण किया जाता है। यह बांस निर्मित लंबवत U आकार की टोकरी है जिसे गोंडी में 'धीर' कहा जाता है। खेतों के मेढ़ों से बहने छोटे नालों में मछली पकड़ने हेतु धीर का उपयोग जाता है। धीर वस्तु का निर्माण कर स्थानीय बाजारों में विक्रय किया जाता है, जिसका मूल्य लगभग 1000 रुपये है। माड़िया समुदाय मछली पकड़ने के लिए स्वयं 'धीर' का निर्माण कर प्रयोग करते हैं। यह वस्तु माड़िया समुदायों के आर्थिक जीविकोपार्जन का एक साधन है।



शिल्पकार द्वारा धीर का निर्माण करते हुए

से
से
बोली
वाली
किया

3. **झांझर** – बांस की पट्टियाँ और बांस की पतली डंडी एवं चाकू की सहायता से 'झांझर' का निर्माण किया जाता है। 'झांझर' शंकु आकार का जालीदार मत्स्यआखेट वस्तु है। इस जाल को गोंडी में 'झांझर' कहते हैं। झांझर के निर्माण में बांस की लम्बी पतली डंडी को सीधी रखी जाती है। बांस की पतली डंडी के कुछ दूरी पर बांस के एक डंडी को प्लास्टिक रस्सी के भीतर व दूसरे डंडी को प्लास्टिक रस्सी के बाहर करते हुए बांस की प्रत्येक डंडी को गोलाकार आकृतियों में बुना जाता है। झांझर के निचले सिरे में गोलाकार आकृति पर बांस की पतली डंडी को उर्ध्वाधर व क्षैतिज रूप में बुनते हैं। झांझर वस्तु कुछ दूरी के मध्य बांस के पट्टियों को गोल घुमाते हुए रस्सी से कसा जाता है। बांस की पट्टियों को रस्सी से कसकर गुंथा जाता है, जिससे झांझर उपकरण को एक शंकु आकार की आकृति में मजबूती से निर्माण किया जा सके। निर्मित झांझर वस्तु को छोटे नालों में बहती हुई पानी पर रखा जाता है। झांझर के ऊपरी सिरा से पानी प्रवेश करता है और निचले सिरे से जल की निकासी होती है। झांझर के निचले सिरे में मछलियां फंस जाती हैं। इस तरह से झांझर वस्तु का प्रयोग मछली पकड़ने के लिए किया जाता है। झांझर जो कि उनके आर्थिक जीविकोपार्जन के लिए महत्वपूर्ण हैं।



झांझर

में

4. **डुटी** – ‘डुटी’ यह आखेट वस्तु है जो कि गोंडी बोली की शब्द है। डुटी जिसे बांस की पट्टियाँ, बांस की पतली डंडी एवं चाकू की सहायता से निर्मित करते हैं। डुटी का आकार अन्य टोकरी की तरह समतल ना होकर चपटा होता है, जिसे क्रॉस पैटर्न में बुनकर बनाया जाता है। ऊर्ध्वाधर मानकों के ऊपर और नीचे बुनकर टोकरी की दीवारों का निर्माण किया जाता है, जो टोकरी की स्थिरता सुनिश्चित करता है। टोकरी के ऊपरी सिरों को बांस पतली डंडी से पट्टियों को गोलाई रूप में बुनकर मजबूती प्रदान की जाती है। निर्मित ‘डुटी’ में सुखाए गये मछलियों का संग्रहण कर रसोई कक्ष के दीवारों में किसी किल के माध्यम से रखा जाता है। इसके अतिरिक्त मछुआरा और शिकारी लोग अपने कमर में डुटी को रखकर शिकार करने जाते हैं और डुटी में मछली, चूहा, खरगोश व पक्षी को भी पकड़कर रखा जाता है।



डुटी

बांस शिल्प का पारंपरिक ज्ञान प्रणाली (Traditional knowledge system of bamboo crafts)

– माड़िया शिल्पकार मुख्यतः आज भी अपने पारंपरिक औजारों से हस्तशिल्प कार्य करते हैं। उनके मुख्य औजार जैसे— दाव, आरी, चाकू, लकड़ी को चिकना करने वाले औजारों के उपयोग और धार तेज करने की विधियाँ भी परंपरा का हिस्सा हैं। पारंपरिक औजारों के उपयोग तथा रखरखाव का ज्ञान मौखिक एवं अनुभाविक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित किया जाता है।

1. बांस की कटाई सामान्यतः वर्षा ऋतु के पश्चात की जाती है। वर्षा ऋतु में बांस के पौधों पर नमी कम होती है और कीट-संक्रमण का खतरा कम रहता है। इस तरह से यह कटाई का सही समय निश्चित करते हैं, जो उनके पारंपरिक ज्ञान पर आधारित है।
2. शिल्पकला के लिए उपयोगी बांस की आयु, बांस का चयन व काटने का सही समय इत्यादि का ज्ञान वह मौखिक रूप से रखते हैं। बांस की जड़ें सुरक्षित रहे इसके लिए वह बांस को जड़ से ना काटकर थोड़ी ऊँचाई पर काटते हैं। कटे हुए बांस को छाया में सुखाया जाता है ताकि उसमें दरार न पड़े। इस प्रकार से माड़िया समुदाय द्वारा बांस को काटने और संरक्षित करने की पारंपरिक तकनीक को अपनाया जाता है।
3. माड़िया जनजाति की शिल्प निर्माण तकनीकें जैसे— (अ) बांस को पतली-पतली पट्टियों में चीरकर फाड़ा जाता है। उपयोग के अनुसार पट्टियों की चौड़ाई और मोटाई बनाई जाती है।

(ब) बुनाई सबसे महत्वपूर्ण चरण है, जिसके लिए अत्यधिक कौशल की आवश्यकता होती है। टोकरी, चटाई, सूपा इत्यादि के लिए विभिन्न प्रकार की क्षैतिज, लंबवत व क्रॉस-बुनाई की तकनीकें अपनाई जाती हैं। (स) आकार देना एवं सजावट-वस्तुओं की मजबूती और उपयोगिता के आधार पर उसका ढाँचा निर्धारित किया जाता है। आधुनिक तकनीकी की सहायता के बिना ही, केवल हस्त कौशल से जटिल प्रारूप तैयार किए जाते हैं। माड़िया शिल्पकार बांस की संरचना को समझते हुए उसे इस प्रकार काटते हैं कि प्राकृतिक रूप से उसकी मजबूती बनी रहें।

4. बांस शिल्पकार केवल परिपक्व बांस को ही काटता है ताकि उसकी जड़े संरक्षित रहे जिससे बांस का पुनर्जनन स्वाभाविक रूप से हो सके। जंगल से अधिक दोहन न करके वह अपने उपयोग के अनुसार ही बांस को वनों से प्राप्त करता है।
5. माड़िया समुदाय की पारंपरिक ज्ञान केवल औपचारिक शिक्षा के माध्यम से ही नहीं, बल्कि अनुभव आधारित ज्ञान को आत्मसात करते हैं। वरिष्ठ बांस शिल्पकारों का मार्गदर्शन प्राप्त होता है। पारिवारिक परंपरा के अनुसार कार्यों को करते हुए तथा अवलोकन के माध्यम से सीखते हैं तथा सामुदायिक श्रम-सहयोग के रूप में ज्ञान प्राप्त कर वह अपने अनुभव को आगे बढ़ाते हैं।

बांसकला के पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण (Preservation of traditional knowledge of bamboo art) – पिता-पुत्र, दादा-पोता तथा महिलाएँ भी चटाई और टोकरी बुनने की कला में निपुण हैं। पारंपरिक ज्ञान जिसे वह अपने परिवारों में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करते हैं, जो कि परिवार आधारित है।

1. गोदुल सामुदायिक संस्थान में माड़िया युवाएँ संगीत, नृत्य और शिल्पकला का भी प्रशिक्षण लेते हैं। सामूहिक श्रम और सहभागिता के माध्यम से कौशल विकसित होता है जो कि यह समुदाय आधारित शिक्षा है।
2. शिक्षा केवल पुस्तकों से ही नहीं बल्कि कार्य को करते हुए सीखते हैं। गलतियों से प्राप्त अनुभव को ज्ञान का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। यह सीख जो कि अनुभव आधारित है।

माड़िया समुदाय में बांस का आर्थिक महत्व (Economic importance of bamboo in the Madia community) – माड़िया जनजाति के शिल्पकार बांस से विभिन्न वस्तुओं का निर्माण करते हैं, जो उनके आर्थिक जीविकोपार्जन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हाट-बाजारों में इन वस्तुओं की

अच्छी मांग होती है। ग्रामीण स्तर पर वस्तु विनिमय भी किया जाता है। बांस से निर्मित वस्तुएँ केवल स्वयं के उपयोग के लिए ही नहीं बल्कि बाजारों में विक्रय कर आय प्राप्त करने का भी एक साधन है, जो उनके आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में सहायक है। बांस का उपयोग खाद्य पदार्थ के रूप में भी किया जाता है। बांस वस्तुओं का उपयोग खाद्य संकलन व शिकार के लिए सर्वाधिक रूप से किया जाता है। बांस माड़िया जनजाति के रोजमर्रा के कार्यों में किसी ना किसी रूप में सहायक है इस तरह से बांस का पौधा उनके दैनिक जीवन में विशिष्टता को दर्शाता है। माड़िया समुदाय प्रकृति से सामंजस्य बनाए रखती है। अतः संसाधनों का दोहन नहीं, बल्कि सतत उपयोग उनका मुख्य उद्देश्य है।

माड़िया समुदाय में बांस का सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व (Socio-cultural importance of bamboo in the Madia community) - शिल्प निर्माण माड़िया जनजाति की एकता का प्रतीक है। शिल्प एक सामुदायिक गतिविधि है, जिसे समुदाय के लोग मिलकर कार्य करते हैं जिसके सहयोग से संस्कृति विकसित होती है। विवाह, तीज-त्यौहार, परंपरागत नृत्य (गेड़ी नृत्य) एवं मृत्यु संस्कार में उपयोग किए जाते हैं। बांस शिल्प माड़िया जनजाति की कला और संस्कृति की पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। कच्चोक वस्तु यह माड़िया जनजाति की एक सांस्कृतिक धरोहर है, विवाह समारोह में कच्चोक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बांस माड़िया समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं से बेहद घनिष्ठ संबंध रखता है। इस तरह बांस का पौधा माड़िया जनजाति के जीवनकाल में महत्वपूर्ण है।

आधुनिकता और वैश्वीकरण का प्रभाव (Impact of Modernity and globalization) –

1. माड़िया समुदाय द्वारा निर्मित बांस की वस्तुएँ जो कि सामान्य रूप से सादा कलाकृति के होते हैं, जो दिखाई देने में आकर्षक तो नहीं होता, किन्तु वस्तुओं में मजबूती बनी रहती है। प्लास्टिक व मशीनी कृत उत्पाद जो कि दिखाई देने में आकर्षक होती है। बाजार में प्लास्टिक व मशीन-निर्मित उत्पादों की बढ़ती उपलब्धता से माड़िया समुदाय के बांस शिल्प की मांग में कमी दिखाई पड़ती है।

2. बांस शिल्पकार अपने द्वारा निर्माण किए गए वस्तुओं को स्वयं हाट बाजारों में जाकर विक्रय करते हैं, किन्तु बस्तर के बांस शिल्पकारों के साथ ऐसा नहीं होता है। बस्तर में अधिकांश बांस से निर्मित वस्तुएँ को हाट बाजारों में बिचौलियों के द्वारा विक्रय किया जाता है। यह बिचौलिए जो कि माड़िया बांस शिल्पकारों द्वारा निर्मित वस्तुओं को एक साथ थोक भाव में क्रय करते हैं और उसे अधिक मूल्यों पर हाट बाजारों में विक्रय करते हैं। जिस कारण से बांस शिल्पकारों को उनके श्रम का उचित मूल्य प्राप्त नहीं हो पाता।

निष्कर्ष (Conclution):

बस्तर के माड़िया जनजाति क्षेत्रों में बांस एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक पौधा है, जिसका प्रयोग मानव अपने जीवन में विभिन्न प्रकार से करते हैं। वास्तव में बांस के बिना ग्रामीण जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। घरेलू वस्तुएँ, मत्स्य आखेट वस्तुएँ एवं इसके अतिरिक्त कृषि उपकरण तथा अन्य वस्तुएँ बांस से निर्मित किए जाते हैं। माड़िया जनजाति बांस शिल्प का स्वयं उपभोग करने के साथ ही बाजारों के मांग के आधार पर शिल्पकला का विक्रय भी कर रही हैं, जो उनके अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाती है। बांसशिल्प से संबंधित कलाकृतियाँ एवं उनके पारंपरिक ज्ञान, माड़िया समुदाय की एक समृद्ध सामाजिक विरासत है। परंपरागत हस्तशिल्प, कलात्मक कृतियाँ माड़िया समुदाय की संस्कृति की पहचान है। बांस शिल्प माड़िया जनजाति के आजीविका का साधन ही नहीं, बल्कि एक समृद्ध पारंपरिक ज्ञान प्रणाली का प्रतिनिधित्व करता है, जो प्रकृति, समाज और संस्कृति के बीच अद्भुत संतुलन स्थापित करता है। आधुनिकता के दौर में इस परंपरा को संरक्षित करते हुए उसे सशक्त बनाने की आवश्यकता है, ताकि माड़िया समुदाय की आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके, सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित रहे और भारत की जनजातीय विरासत आने वाली पीढ़ियों तक संरक्षित रह सके। इस पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण और आधुनिक संदर्भों में पुनर्जीवन से न केवल शिल्पकारों की आजीविका सुदृढ़ होगी बल्कि भारत की पारंपरिक कला विरासत भी सुरक्षित रहेगी। बांस शिल्पकला के पारंपरिक ज्ञान को डिजिटल रूप में दस्तावेजीकृत करना आवश्यक है। शिल्पकारों को आधुनिक उपकरणों और तकनीक का प्रशिक्षण देकर उनके अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाया जा सकता है।

आभार (Acknowledgement) : प्रस्तुत शोध पत्र “समकालीन परिप्रेक्ष्य में माड़िया जनजाति का शिल्पकला और लोकपरंपराओं की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ (छत्तीसगढ़ के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)” शीर्षक से संचालित शोध परियोजना पर आधारित है, जिसे ICSSR, नई दिल्ली

द्वारा वित्तपोषित किया गया (फाइल संख्या – ICSSR/RPD/RPR/2023-24/43) है। सभी लेखकों के द्वारा प्रदान की गई वित्तीय सहायता एवं सहयोग के लिए हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. D. Farrelly, "The Book of Bamboo: A Comprehensive Guide to This Remarkable Plant, Its Uses, and Its History", Sierra Club Books, San Francisco, 1984.
2. N. Bystriakova, V. Kapos, I. Lysenko and C. Stapleton, "Distribution and Conservation Status of Forest Bamboo Biodiversity in the Asia-Pacific Region", Biodiversity and Conservation, Vol. 12, no. 9, pp. 1833-1841, Sep. 2003.
3. G. K. Ghosh, "Bamboo: The Wonderful Grass", A.P.H. PUBLISHING CORPORATION, New Delhi, pp. 10-16, 2008.
4. J. Jaitly, "Crafts Atlas of India", Niyogi Books, New Delhi, pp. 4-18, March 2012.
5. S. Tewari, H. Negi, and R. Kaushal, "Status of Bamboo in India", International Journal of Economic Plants, Vol. 6, no. 1, pp. 030-039, 2019.
6. R. Tripathi, "Vishwa mein Avval hai Bastariya Kala-Shilp!", Janjatiya Shodh evam Kalyan Sansthan, (Chhattisgarh), Ravivar Delhi, August 2023.
7. W. V. Grigson, "The Maria Gonds of Bastar", Oxford University Press, pp. 1-284, pp. 49-57, 1938.
8. T. K. Vaishnav, "Chhattisgarh ki Janjatiyan (in hindi)" Chhattisgarh Rajya Granth Akadamy, 2017.
9. Tribal Research & Training Institute, "Chhattisgarh ki Janjatiya Atlas, Nava Raipur", Government of Chhattisgarh, E-Library, 2020.